## 5th & 6th October 2021

# मार्केट की मांग के अनुसार शुगर क्वॉलिटी शुगर इंडस्ट्री दे

**79वां वार्षिक अधिवेशन एवं इण्टरनेशनल एक्सपो शुरू**

▶ गवर्नर आनंदीबेन पटेल ने ऑनलाइन इनॉग्रेशन किया

डीटीएनएन

कानपुर। दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया एवं राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 79वां वार्षिक अधिवेशन एवं इण्टरनेशनल एक्सपो प्रारंभ हो गया। इस अधिवेशन में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से 6 हजार से अधिक प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, सुश्री आनंदी बेन पटेल द्वारा ऑनलाइन माध्यम से किया गया। उद्घाटन समारोह में सुधांशु पाण्डेय, सचिव, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण, भारत सरकार, संजय भूसरेड्डी, अतिरिक्त मुख्य सचिव, इक्साइज चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास, उत्तर प्रदेश, नरेन्द्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, एवं संजय अवस्थी, अध्यक्ष, दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया शामिल रहे। अपने भाषण में माननीय राज्यपाल ने भारत के चीनी उद्योग के विकास में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर एवं दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की भूमिका की सराहना की। उन्होंने फार्म के यंत्रीकरण, उत्पादकता बढ़ोत्तरी एवं चीनी की गुणवत्ता को बाजार की मांग के अनुसार बेहतर करने पर जोर दिया।

## चीनी की मांग व आपूर्ति में संतुलन बना कर रखना होगा

सुधांशु पाण्डे, सचिव खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण, भारत सरकार ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान को उसके स्थापना दिवस पर बधाई देते हुए चीनी उद्योग का आह्वान किया कि वह अपनी समस्याओं हेतु संस्थान के साथ मिलकर कार्य करें। चीनी की मांग और आपूर्ति के संतुलन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि चीनी मिलों को विभिन्न माध्यमों से चीनी के स्थान पर एथेनॉल बनाने पर ध्यान देना चाहिए ताकि न केवल चीनी की मांग व आपूर्ति में संतुलन बना रहे अपितु एथेनॉल को पेट्रोल में 20% की ब्लेंडिंग के लक्ष्य को 2025 तक प्राप्त किया जा सके। हमको चीनी मिलों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये पूरी स्युगरकेन वैल्यू चेनज का उपयोग कर व्वैल्यू एडेड प्रोडक्टस बनाकर अपनी आय को बढ़ाने के लिये करना होगा, उन्होंने कहा।

## ब्राजील में चीनी का उत्पादन कम होगा

संजय अवस्थी, अध्यक्ष, दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट



एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने विश्व बाजार में 2021-22 में चीनी की उपलब्धता जो कि ब्राजील में 70-80 लाख टन चीनी कम होने के कारण कम होगी। इसका लाभ उठाकर निर्यात करने पर जोर दिया। ब्राजील में चीनी का उत्पादन कम होने पर हमें अपने निर्यात पर ज्यादा फोकस करना होगा वहीं नहीं हमें चीनी की बेहतर क्वालिटी अंतरराष्ट्रीय बाजार में उपलब्ध करानी होगी।

## गो इलेक्ट्रिक पॉलिसी

इस अवसर पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने संस्थान के विभिन्न क्रियाकलापों के बारे में बताते हुए सम्पूर्ण चीनी उद्योग को तकनीकी मानव शक्ति प्रदान किये जाने के बारे में जानकारी दी। अपने सम्बोधन में एथेनॉल ब्लेंडिंग कार्यक्रम हेतु विभिन्न माध्यमों से एथेनॉल की उपलब्धता बढ़ाए जाने के बारे में एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए उन्होंने शर्करा उद्योग को आगाह किया कि वह कच्चे माल की उपलब्धता और भारत सरकार की गो इलेक्ट्रिक पॉलिसीज को ध्यान में रखें जिसके अनुसार वर्ष 2030 तक पारंपरिक वाहन इलेक्ट्रिक वाहन में परिवर्तित किये जाने की योजना है।

## शुगर इंडस्ट्री जैव ईंधन पर फोकस करे

अधिवेशन के प्रथम दिन संजय भूसरेड्डी, अतिरिक्त मुख्य सचिव, द्वारा प्रोफेसर एस.एन.गुण्डूराव मेमोरियल व्याख्यान दिया गया जहाँ उन्होंने चीनी उद्योगों को एक लाभप्रद उद्योग में बदलने हेतु गन्ने की प्रजातियों में सुधार एवं बायो फ्यूल (जैव ईंधन) के उत्पादन पर जोर दिया। श्री संजय देसाई, प्रबंध निदेशक, मैसर्स रीग्रीन एक्सेल ई.पी.सी. इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड एवं श्री किरन डंगवाल, टेक्निकल हेड, इस्नैक द्वारा एथेनॉल प्रोडक्शन बढ़ाने हेतु विभिन्न रणनीति पर अपना प्रेजेनटेशन दिया गया।

## 'ए ड्राइव थ्रू एन.एस.आई. कैंपस' जारी

उद्घाटन सत्र में दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के विभिन्न प्रकाशन, यथा अधिवेशन की कार्यवाही, भारत एवं पड़ोसी राष्ट्रों में स्थित चीनी मिलों एवं डिस्टलरी की डायरेक्टरी एवं सोविनियर जारी की गयी। चूंकि 4 अक्टूबर को संस्थान का स्थापना दिवस भी है अतः इस अवसर पर संस्थान की वर्ष 2020-21 की वार्षिक रिपोर्ट एवं डाक्यूमेन्टरी 'ए ड्राइव थ्रू एन.एस.आई. कैंपस' जारी की गयी। इस अवसर पर विभिन्न लब्धप्रतिष्ठित विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों को विभिन्न अवार्ड से सम्मानित किया गया जिसकी सूची संलग्न है।





# 5 साल तक चीनी का स्टॉक, अब मिलों का एथेनॉल बनाने पर जोर

**सालभर में यूपी की चीनी मिलों ने बनाया 168 करोड़ लीटर एथेनॉल, बीते 3 सालों में यूपी ने किया पड़ोसी देशों को 23 लाख मिलियन चीनी का निर्यात**

कानपुर, 4 अक्टूबर। दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोएिशन ऑफ इण्डिया एवं राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से आयोजित 79वां वार्षिक अधिवेशन एवं इण्टरनेशनल एक्सपो का शुभारंभ आनलाइन करतीं हुई राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने फार्म के यंत्री करण, उत्पादकता बढ़ोत्तरी एवं चीनी की गुणवत्ता को बाजार की मांग अनुसार बेहतर करने पर जोर दिया। शासन से अतिरिक्त मुख्य सचिव, संजय भूसरेडडी ने कहाकि बीते 4 सालों में चीनी मिलों में गन्ना पेराई 750 से बढकर 1118 लाख कुंतल पहुंच गयी है, जोकि महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश सहित कई राज्यों में पीछे छोड़ दिया है और अब चीनी उत्पादन, शीरा, पावर जनरेट, इथेनॉल में भी देश में नंबर-वन स्थान पर काबिज है, जोकि एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। समारोह में 5 को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड और 10 सदस्यों को इण्डस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। कोरोना काल के मद्देनजर श्री भूसरेडडी ने बताया कि कोरोना काल में 92 इण्डस्ट्री में करीब 6 लाख 20 हजार लीटर सेनिटाइजर तैयार किया गया है और सालभर में यूपी की चीनी मिलों में 168 करोड़ लीटर एथेनॉल भी बनाया है। बीते तीन सालों में यूपी से 23 लाख मिलियन टन चीनी का निर्यात किया गया, जिसमें नेपाल, बांग्लादेश, दुबई, अफ्रीकी देश शामिल है। उन्होंने कहाकि चीनी का खपत घटने और एथेनॉल का उत्पादन बढ़ाया है। दावा है कि यदि सभी चीनी मिले बंद हो जाय तो भी आगामी पांच साल तक यूपी के लोगों को चीनी मुहैया करा सकेंगे। उन्होंने बतायाकि आबकारी और गन्ना मिलो ने 75 जिलों में 79 ऑक्सीजन प्लांट भी लगाये है। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण, सचिव सुधांशु पांडे ने चीनी मिलों को विभिन्न माध्यमों से चीनी के स्थान पर एथेनाल पर पेट्रोल में 20 फीसदी की ब्लेडिंग के लक्ष्य को 2025 तक प्राप्त करने की दिशा में काम करना चाहिये। शुगरकेन वैल्यू चेन का उपयोग कर वैल्यू एडेड प्रोडक्ट बनाकर अपनी आय को बढ़ाने के लिए काम करना होगा। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने इथेनॉल ब्लेडिंग कार्यक्रम हेतु एथेनॉल की उपलब्धता पर चर्चा करते हुए विस्तुत रूपरेशा प्रस्तुत की। उन्होंने चीनी उद्योग को आगाह किया कि वह कच्चे माल की उपलब्धता और भारत सरकार की गो इलेक्ट्रिक पॉलिसी को ध्यान में रखे। जिसके अनुसार वर्ष 2030 तक पारंपरिक वाहन इलेक्ट्रिक वाहन में परिवर्तित किये जाने की योजना है। संस्थान की वर्ष 2020-21 की वार्षिक रिपोर्ट एवं डाकयुमेन्ट्री ए ड्राइव थ्रू एनएसआई कैंपस जारी की गई। इस दौरान एसो. के अध्यक्ष संजय अवस्थी, अमित खटटर, रीग्रीन एक्सेल एमडी संजय देसाई, किरन डंगवाल आदि मौजूद रहे।

**5 को लाइफ टाइम एचीवमेंट और 10 सदस्यों को इण्डस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड**




सम्मानित सदस्यों के साथ अतिरिक्त मुख्य सचिव संजय भूसरेडडी, प्रो.नरेन्द्र मोहन व अन्य।

## गुजरात मॉडल पर गन्ना किसानों को लाभ



कानपुर। पूर्व सांसद मानसिंह के. पटेल को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड मिला है। उन्होंने कहाकि पीएम मोदी गुजरात मॉडल की बात पर जोर देते है। क्योकि वहां चीनी मिले कोपरेटिव के तहत कम करती है और वहां गन्ना का भुगतान बाजार मूल्य से अधिक पर किया जाता है। उनका कहना है कि यूपी के गन्ना किसान भूखे व पीड़ित है। श्री पटेल गुजरात विस, स्पीकर भी रह चुके है और वर्तमान में शुगर फेडरेशन के अध्यक्ष भी है।

## 150 इण्डस्ट्री में दी कंसल्टेंसी सेवाएं

कानपुर। एनएसआई कानपुर के स्थापना दिवस के अवसर पर पूर्व छात्र जय कुमार को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड दिया गया। उन्होंने सन 1974 को संस्थान से पीजी कोर्स उत्तीर्ण किया था। इसके बाद पुणे में शुगर इंस्टीट्यूट में सहयोग दिया और फिर 28 साल की उम्र में चीफ इंजीनियर बन गये। देश की 150 से अधिक चीनी मिलों में सलाहकार यानि कसंल्टेंसी की भूमिका अदा की।

## इन सदस्यों को मिला अवार्ड

कानपुर। समारोह में मानसिहभाई कल्याणजी पटेल, राघवन, गोविंद शुगर, निधीश प्रकाश, जाधव जयकुमार, ततोबा, जे.पी. श्रीवास्तव को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड और सजय भूसरेडडी, सचिन निकम, जिंदल स्टेनसस्टील, मुनीश मदान, प्रो. डी स्वान, एन.डी. ठाकरे, डालमिया भारत शुगर को इण्डस्ट्री एक्सी लेंस अवार्ड दिया गया। सम्मानित सदस्यों को शाल और प्रशस्तिपत्र दिया गया।

आप की आवाज़..... www.nagarchhaya.com

# एन.एस.आई में वार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन 52 शोध पत्र प्रस्तुत

कानपुर (नगर छाया समाचार)। दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया एवं राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 79वां वार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन 52 शोधपत्र प्रस्तुत किये गये इसमें से 26 गन्ना कृषि 16 फैक्ट्री इंजीनियरिंग व प्रोसेसिंग तथा 10 सह-उत्पादों से संबंधित थी। विशेषज्ञों ने दक्षिण कर्नाटक एवं तमिलनाडू में चीनी की रिकवरी कम होने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए वर्तमान में प्रयोग में लायी जा रही गन्ना प्रजाति को 86032 के स्थान पर को 128009, को-18009 एवं को 14027 को प्रयोग में लाये जाने पर चर्चा की। साथ ही चुकन्दर की विभिन्न प्रजातियों पर किये गये अनुसंधान विवरण भी प्रस्तुत किया गया ताकि चुकन्दर से एथेनॉल बनाकर एथेनॉल ब्लेंडिंग का लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उ.प्र. गन्ना शोध परिषद द्वारा उत्तर प्रदेश में को-0238 गन्ने की प्रजाति में लाल सड़न रोग के कारण उत्पन्न स्थिति को देखते हुए नयी गन्ने की प्रजातियों के बारे में एक रोड मैप प्रस्तुत किया गया। प्रोसेसिंग सेक्शन में चीनी मिल की उत्पादकता बढ़ाने, ऊर्जा एवं पानी की खपत कम करने तथा चीनी की गुणवत्ता बढ़ाने सम्बंधित विभिन्न विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किये गये।

स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइस लिमिटेड द्वारा प्रेजेन्टेशन में मेकेनिकल वेपर री-कम्प्रेशन एवं प्लेट टाइप इवापोरेटर के प्रयोग द्वारा गन्ने के रस को गाढ़ा करने पर चर्चा की गयी जिसमें लगभग 10 प्रतिशत स्टीम की बचत सम्भव होगी। गन्ने से रस निकालने की वैकल्पिक तकनीकों यथा टू रोलर मिल एवं केन डिफ्यूजर के बारे में चर्चा की गयी जिसमें कम ऊर्जा की खपत से अधिक जूस प्राप्त किया जा सकता है। राष्ट्रीय

शर्करा संस्थान द्वारा गन्ने के रस की सफाई एवं प्रोसेसिंग के दौरान रस के पी.एच. को ओटोमेटिक कन्ट्रोल करने हेतु एक स्वतः नियंत्रण प्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी।

सह-उत्पादों से विभिन्न वेल्यू एडेड प्रोडक्ट बनाकर चीनी मिलों की अर्थव्यवस्था सुधारने पर भी कई प्रेजेन्टेशन प्रस्तुत किये गये। जहाँ चीनी मिल से निकलने वाले फिल्टर केक से कम्प्रेस्ड बायो गैस एवं ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर के बारे में चर्चा की गयी वहीं शीरे पर आधारित डिस्टलरी के स्पेन्टवॉश से स्प्रे ड्राइंग या अन्य तकनीकों के माध्यम से पोटाश प्राप्त करने पर चर्चा की गयी। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की वनिष्ठा शुक्ला द्वारा एक कन्डेनसेट पोलिशिंग यूनिट के बारे में भी प्रेजेन्टेशन दिया गया जिसके द्वारा चीनी मिलों का गंदा पानी पुनः प्रयोग योग्य बनाया जा सकता है। संस्थान की रिसर्चफलो अनुष्का अग्रवाल एवं श्रुति शुक्ला द्वारा मीठी चरी से प्राकृतिक लो कैलोरी लिक्विड शुगर बनाने की विधि पर भी चर्चा की गयी।

समापन समारोह में संस्थान के निदेशक ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए यह आशा व्यक्त की कि भारत में चीनी उद्योग न केवल आत्मनिर्भर होगा बल्कि अपने प्रयासों से दूसरे देशों को चीनी एवं अन्य उत्पाद निर्यात करने में संभव हो सकेगा।

# इथेनॉल प्रोडक्शन बढ़ाने की जरूरत

**दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के 79वें वार्षिक अधिवेशन का गवर्नर आनंदीबेन पटेल ने किया ऑनलाइन शुभारंभ**

kanpur@inext.co.in

**KANPUR (4 Oct):** एनएसआई में दि शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया का 79 वां वार्षिक अधिवेशन आयोजित किया गया. ऑनलाइन शुभारम्भ करते हुए गवर्नर आनन्दी बेन पटेल ने कहा कि अच्छे बीज और नई तकनीक की वजह से प्रदेश में गन्ने की अच्छी पैदावार है. अब पेट्रोल में ब्लेंडिंग के परसेंट को बढ़ाने के लिए इथेनॉल का उत्पादन अधिक करना होगा. उन्होंने कहा कोरोना काल में तकनीक की ताकत दुनिया देख चुकी है.

## 2025 तक का लक्ष्य

ऑनलाइन जुड़े खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सचिव सुधांशु पांडेय ने कहा कि चीनी मिलों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वैल्यू ऐडेड प्रोडक्ट का निर्माण कर आय बढ़ानी होगी. एथेनॉल की पेट्रोल में 20 फीसद ब्लेंडिंग के लक्ष्य को 2025 तक प्राप्त करने के प्रयास चल रहे हैं. अपर मुख्य सचिव संजय भूसरेड्डी ने गन्ने की प्रजातियों में सुधार के साथ ही जैव ईंधन के उत्पादन पर जोर दिया. अधिवेशन की थीम बायो फ्यूल और बायो एनर्जी थी. निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने ने इथेनॉल का उत्पादन बढ़ाने की रूपरेखा प्रस्तुत की. संस्थान का स्थापना दिवस भी मनाया गया.

PIC: DAINIK JAGRAN INEXT

अधिवेशन में किया गया सम्मानित.

### लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

- मानसिंह भाई कल्याणजी पटेल, आरएस राघवन, निधीश प्रकाश, जयकुमार ताता साहेब जाटव, जेपी श्रीवास्तव

### इंडस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड

- संजय भूसरेड्डी, संजय रस्तोगी, सचिन निकम, जिंदल स्टेनलेस स्टील, श्रीजी प्रासेस लिमिटेड, मुनीष मदान, मुथुवेलप्पन, प्रो. डी स्वेन, डा. एसएस निंबल्कर, एनडी थाकरे.

## डिस्टिलरी की तकनीक बताई

एक्सपो में दो दर्जन से अधिक कंपनियों के स्टाल लगे हैं . इसमें चीनी और डिस्टिलरी उद्योग से संबंधित तकनीक को विस्तार से समझाते हुए प्रदर्शित की गईं. जीरो डिस्चार्ज, ग्रीन फ्यूल, ट्रीटमेंट प्लांट, रिफाइंड चीनी, भूरी चीनी आदि शामिल हैं.

### कोऑपरेशन पर विश्वास

गुजरात में डिप्टी स्पीकर रह चुके मानसिंह भाई कल्याणजी पटेल ने बताया कि गुजरात में चीनी मिलें कोऑपरेशन के सहयोग से संचालित हो रही है. किसानों को उस पर विश्वास है. हर साल उन्हें फिक्स्ड रेट प्राइस से ज यादा मिलता है. जयकुमार ताता साहेब जाटव ने बताया कि उन्होंने 1974 में एनएसआई से मास्टर्स डिग्री हासिल की. महाराष्ट्र में कंसल्टिंग का कार्य शुरू किया. 28 वर्ष में चीफ इंजीनियर का कार्य करते हुए 150 से अधिक मिलों को परामर्श दे चुके हैं.

PIC: DAINIK JAGRAN I NEXT

अधिवेशन में जुटे देश भर के एक्सपर्ट्स.

# फिल्टर केक से बनेगी कंप्रेस्ड बायो गैस और जैविक खाद

**एनएसआई में एसटीएआई के वार्षिक अधिवेशन में एक्सपर्ट्स ने चीनी मिलों और डिस्टिलरी की अर्थव्यवस्था सुधारने का फार्मूला दिया**

**KANPUR (5 Oct):** नेशनल सुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में चल रहे दि शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसटीएआई) का वार्षिक अधिवेशन ट्यूजडे को खत्म हो गया. इसमें विशेषज्ञों ने चीनी मिलों और डिस्टिलरी की अर्थव्यवस्था सुधारने का फार्मूला प्रस्तुत किया. इसमें चीनी मिल से निकलने वाले फिल्टर केक से कंप्रेस्ड बायोगैस व जैविक खाद, शीरे पर आधारित स्पेंटवाश से पोटाश प्राप्त करने का तरीका बताया.

### रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए

इस दौरान विभिन्न संस्थानों और चीनी मिलों के विशेषज्ञों ने 52 रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए. निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन, एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय अवस्थी, प्रो. डी स्वेन समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहे.

### टेक्निकल बिंदुओं पर चर्चा

- चीनी मिल की उत्पादकता बढ़ाने और ऊर्जा व पानी की खपत कम करने की तैयारी.
- चुकंदर से इथेनॉल बनाने से पेट्रोल में इथेनाल की ब्लेंडिंग के परसेंटेज को बढ़ाया जा सकेगा.
- दक्षिण कर्नाटक और तमिलनाडु में चीनी की रिकवरी कम होने पर गन्ने की को-128009 और को-18009 प्रजाति प्रयोग में लाई जाएगी.
- यूपी की को-0238 प्रजाति में लगने वाले लाल सड़न रोग से नई प्रजातियां को उगाने पर रोड मैप तैयार किया.
- गन्ने के रस को गाढ़ा करने की तकनीक पर चर्चा हुई.

# कम पानी में कैसे हो गन्ना, वैज्ञानिक बताएंगे

**एनएसआई में दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया के अधिवेशन में विशेषज्ञों ने गन्ने की खेती, चीनी उत्पादन और गुणवत्ता पर की चर्चा**

एनएसआई में आयोजित अधिवेशन में जाधव जयकुमार ततोबा, राघवन, निधीश प्रकाश, मान सिंह भाई कल्याण जी पटेल, जयप्रकाश श्रीवास्तव (बाएं से अवार्ड के साथ) को दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी, रमाकांत पांडेय, मुख्य अतिथि संजय भूसरेड्डी, निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन और आरएल तामक ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड देकर सम्मानित किया। अमर उजाला

माई सिटी रिपोर्टर

**कानपुर।** गन्ना किसानों को अक्सर इस तोहमत से दो-चार होना पड़ता है कि उनकी खेती से भूगर्भ जलस्तर तेजी से नीचे जा रहा है। एक टन गन्ना पैदा करने में करीब 250 टन पानी खर्च होता है। गन्ना पट्टी, खासकर पश्चिमी यूपी जलसंकट के लिहाज से डार्क जोन में आ चुका है। संकट इतना गहरा है कि प्रधानमंत्री मोदी तक हाल में संसद में सिंचाई के पुराने तौर-तरीकों पर चिंता जता चुके हैं। कम पानी में कैसे हो गन्ने की फसल, चीनी वैज्ञानिकों के आगे खड़ी इस चुनौती पर देश भर के विशेषज्ञों ने सोमवार को यहां चर्चा की।

नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) के स्थापना दिवस के मौके पर दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया के 79वें अधिवेशन में देश भर के विशेषज्ञों ने गन्ने पर शोध, चीनी उत्पादन और गुणवत्ता पर चर्चा की। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सचिव सुधांशु पांडेय ने जलवायु परिवर्तन के दौर में पैदा हो रहे खतरों में अवसर की तलाश पर जोर दिया और सलाह दी कि वैज्ञानिक गन्ने की ऐसी प्रजातियां तैयार करें जिसमें सिंचाई की जरूरत कम पड़े। उन्होंने कहा कि चीनी से वैल्यू एडेड उत्पाद बनाने पर भी शोध करना चाहिए। विशेषज्ञों ने कहा कि नए बदलाव के साथ चीनी का रूप बदलने की जरूरत है। पौष्टिक चीनी तैयार करें ताकि रोजगार के नए अवसर पैदा हों।

ऑनलाइन और ऑफलाइन, दोनों मोड में हुए अधिवेशन का उद्घाटन राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने किया। इंटरनेशनल शुगर एक्सपो में मशीनरी निर्माता कंपनियों और सेवा प्रदाताओं ने चीनी उत्पादन से संबंधित स्टाल लगाए। चीनी उद्योग से जुड़े पांच विशेषज्ञों को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड और 10 लोगों को इंडस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड दिया गया। दि शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी, अतिरिक्त मुख्य सचिव (गन्ना विकास) संजय भूसरेड्डी, एनएसआई के निदेशक डॉ. नरेंद्र मोहन ने भी विचार रखे। इसके बाद भारत और पड़ोसी राष्ट्रों की चीनी मिलों-डिस्टलरी की डायरेक्टरी और सोविनियर जारी की गई।

### यूपी के पास चीनी का पांच साल का स्टाक

यूपी वालों के पास चीनी की कमी नहीं है। अगर एक दाना भी न पैदा हो तो भी प्रदेश में पांच साल का भरपूर स्टाक है। एक्साइज, चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव संजय भूसरेड्डी ने सोमवार को पत्रकारों से बातचीत में बताया कि साढ़े चार सालों में यूपी चीनी उत्पादन में महाराष्ट्र से आगे निकल गया है। इस वक्त प्रदेश 23 लाख टन चीनी निर्यात कर रहा है। अधिवेशन में हिस्सा लेने आए अतिरिक्त मुख्य सचिव ने बताया कि इथेनॉल उत्पादन से किसानों की आय बढ़ी है। चीनी का 17 फीसदी उत्पादन घटा कर इथेनॉल बनाया जा रहा है। इथेनॉल पेट्रोल में मिलाया जाएगा। शीरे का भी निर्यात हो रहा है। कोरोना काल में चीनी मिलों को सैनिटाइजर के रूप में नया उत्पाद मिल गया है। मार्च से लेकर अब तक छह लाख लीटर सैनिटाइजर बनाया गया है। गन्ना आबकारी विभाग ने 75 जिलों के अस्पतालों और सीएचसी पर 79 ऑक्सीजन जनरेटर प्लांट लगवाए हैं।

### इन्हें दिए गए अवार्ड

**लाइफ टाइम अचीवमेंट :** मान सिंह भाई कल्याण जी पटेल, राघवन, जाधव जयकुमार ततोबा, जेपी श्रीवास्तव, निधीश प्रकाश

**इंडस्ट्री एक्सीलेंस :** संजय भूसरेड्डी, डालमिया भारत शुगर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड, डॉ. सचिन निकम, जिंदल स्टेनलेस लिमिटेड, श्रीजी प्रोसेस इंजीनियरिंग वर्क्स लिमिटेड, मुनीश मदान, कैटेलिस्ट ग्रुप, मुथुवेलेप्पन, एनएसआई के प्रोफेसर डी स्वेन, डॉ. एसएस निम्बाल्कर मार्क लैब प्राइवेट लिमिटेड, एनडी ठाकरे इंडो पंप नासिक

**शोध पत्रों के लिए दिए गए अवार्ड**

**नोयल डीयर गोल्ड मेडल**
बख्शीराम (गन्ने की खेती के लिए), केबी काले, एमबी लोंधे, संदीप शर्मा, चारू कोहरवाल (फैक्टरी इंजीनियरिंग के लिए), अनुराग गोयल, दीप्ति मिश्रा (फैक्टरी प्रोसेसिंग के लिए), प्रोफेसर नरेंद्र मोहन, विष्णु प्रभाकर श्रीवास्तव, चित्रा (को-प्रोडक्ट्स के लिए)

**एसीएआई सिल्वर मेडल**
प्रियंका सिंह, एमएम सिंह, कुलदीप कुमार, संजय अवस्थी, जे. सिंह, पीएस श्रीवास्तव, अनूप केसरवानी, राजेश वर्मा, प्रभाकर वर्मा

**डॉ. पीजे मनोहर राव गोल्ड मेडल फॉर एक्सीलेंस इन को-प्रोडक्ट्स:** प्रोफेसर नरेंद्र मोहन, निदेशक एनएसआई

**इम्पी गोल्ड मेडल इंजीनियरिंग फॉर एक्सीलेंस**
प्रोसेस इंजीनियरिंग में एस. शिव कुमार और प्रोसेस टेक्नोलॉजी में सुनील सिंघल

**डॉ. बंशीधर गोल्ड मेडल**
पंकज सिंह, अतुल श्रीवास्तव, सूर्य कुमार सचान, राममोहन चौहान

**जेपी मुखर्जी गोल्ड मेडल- बेस्ट इंजीनियर ऑफ दि ईयर-2020**
संजय कुमार चौधरी (असिस्टेंट वाइस प्रेसीडेंट एंड यूनिट हेड, मावना शुगर लिमिटेड)

### कोऑपरेटिव से होगा चीनी उद्योग का विकास

गुजरात के शुगर उद्यमी मान सिंह भाई कल्याण जी पटेल ने कहा कि चीनी उद्योग का विकास कोऑपरेटिव से ही होगा। इसके लिए किसानों का विश्वास जीतना जरूरी है। गुजरात में गन्ना किसान सरकार से कोई मदद नहीं लेते, किसानों ने कोऑपरेटिव बना रखी है। इसके जरिये ही वह अपनी जरूरतें पूरी कर लेते हैं। उन्होंने बताया प्रधानमंत्री भी कोऑपरेटिव की बात करते हैं। कल्याण जी गुजरात से सांसद, विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रहे हैं।

### गन्ने से बनाए जा रहे वैल्यू एडेड उत्पाद

महाराष्ट्र के जाधव जयकुमार ततोबा ने एनएसआई से ही पढ़ाई की है। वह अब तक करीब डेढ़ सौ फैक्टरियों को कंसल्टेंसी दे चुके हैं। उन्होंने कहा कि चीनी उद्योग में बदलाव की स्थिति हैं। गन्ने से इथेनॉल और वैल्यू एडेड उत्पाद बनाए जा रहे हैं। इससे रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

# दि शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया का 79 वां वार्षिक अधिवेशन आयोजित, राज्यपाल ने ऑनलाइन किया शुभारंभ

कानपुर (नगर छाया समाचार)। प्रदेश में गन्ने की अच्छी पैदावार के लिए अच्छे बीज और नई तकनीक वजह है। पिछले कई वर्षों में चीनी का उत्पादन बढ़ा है। अब पेट्रोल में ब्लेंडिंग के फीसद को बढ़ाने के लिए इथेनाल का उत्पादन अधिक करना होगा। यह बात राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कही। वह सोमवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) में दि शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसिएशन आफ इंडिया का 79 वां वार्षिक अधिवेशन का आनलाइन शुभारंभ कर संबोधित कर रहीं थी। उन्होंने कहा कि प्रदेश का 30 लाख किसान गन्ने की खेती कर रहा है। कृषि विज्ञानियों की वजह से तकनीक में तेजी आई है। अभी और कार्य करने की जरूरत है। कोरोना का काल में तकनीक की ताकत दुनिया देख चुकी है। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सचिव सुधांशु पांडेय भी आनलाइन जुड़े। उन्होंने कहा कि चीनी मिलों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मूल्य संवर्धित उत्पाद का निर्माण कर आय बढ़ानी होगी। एथेनाल की पेट्रोल में 20 फीसद ब्लेंडिंग के लक्ष्य को 2025 तक प्राप्त करने के प्रयास चल रहे हैं। अपर मुख्य सचिव संजय भूसरेड्डी ने गन्ने की प्रजातियों में सुधार के साथ ही जैव ईंधन के उत्पादन पर जोर दिया। अधिवेशन की थीम बायो फ्यूल और बायो एनर्जी थी। विभिन्न सत्रों में शोध पत्र, पेटेंट आदि प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम आनलाइन और आफलाइन मोड पर आयोजित हुआ, जिसमें करीब पांच हजार लोग शामिल हुए। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने ने इथेनाल का उत्पादन बढ़ाने की रूपरेखा प्रस्तुत की। संस्थान के स्थापना दिवस भी मनाया गया। वार्षिक रिपोर्ट, भविष्य की योजनाएं बताई गईं। संस्थान पर बनी डाक्युमेंट्री फिल्म प्रस्तुत हुई। एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय अवस्थी, अमित खट्टर, संजय देसाई समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

चीनी और डिस्टिलरी उद्योग की तकनीक बताई एक्सपो में दो दर्जन से अधिक कंपनियों के स्टाल लगे। इसमें चीनी और डिस्टिलरी उद्योग से संबंधित तकनीक प्रदर्शित की गईं। जीरो डिस्चार्ज, ग्रीन फ्यूल, ट्रीटमेंट प्लांट, रिफाइंड चीनी, भूरी चीनी आदि शामिल हैं।

लाइफ टाइम अचीवमेंट का खिताब मानसिंह भाई कल्याणजी पटेल, आरएस राघवन, निधीश प्रकाश, जयकुमार ताता साहेब जाटव, जेपी श्रीवास्तव इंडस्ट्री एक्सीजेंस का अवार्ड - संजय भूसरेड्डी, संजय रस्तोगी, सचिन निकम, जिंदल

स्टेनलेस स्टील, श्रीजी प्रासेस लिमिटेड, मुनीष मदान, मुथुवेलप्पन, प्रो. डी स्वेन, डा. एसएस निंबल्कर, एनडी थाकरे। गुजरात में किसानों को कोआपरेशन पर विश्वास गुजरात में डिप्टी स्पीकर रह चुके मानसिंह भाई कल्याणजी पटेल ने बताया कि गुजरात में चीनी मिलें कोआपरेशन के सहयोग से संचालित हो रही है। किसानों को उस पर विश्वास है। हर साल उन्हें फिक्सड रेट प्राइस से ज्यादा मिलता है। जयकुमार ताता साहेब जाटव ने बताया कि उन्होंने 1974 में एनएसआइ से मास्टर्स डिग्री हासिल की। महाराष्ट्र में कंसल्टिंग का कार्य शुरू किया। 28 वर्ष में चीफ इंजीनियर का कार्य किया। अब तक 150 से अधिक मिलों को परामर्श दे चुके हैं। ट्रक में फ्लोर मिल की तकनीक, माडर्न किचन निमी स्टील कंपनी का ट्रक भी आया था, जिसमें स्टेनलेस स्टील की फ्लोर मिल के उपकरण, माडर्न किचन, लिफ्ट, बिल्डिंग, रैक, चकर्ड शीट आदि प्रदर्शित था। यह हिसार से प्रदर्शनी में शामिल हुआ। तकनीशियन अभिषेक और राहुल कुमार ने जानकारी दी।

# दक्षिण की मिलों में चीनी की रिकवरी चिंतनीय

## ❑ गन्ने की नई प्रजाति को लेकर रोडमैप तैयार, चर्चा की

अधिवेशन में मौजूद अतिथि व विशेषज्ञ।

आयोजित द शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया की 79वें वार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन चीनी उद्योग की समस्या व भविष्य को लेकर विचार-विर्मश हुआ। आज अधिवेशन के दूसरे दिन 52 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए, जिसमें 26 गन्ना कृषि, 16 फैक्ट्री इंजीनियरिंग व प्रोसेसिंग और 10 सह-उत्पादों से संबंधित थे। चीनी उद्योग से जुड़े वैज्ञानिकों ने गन्ने के रस को गाढ़ा

**● द शुगर टेक्नालाजिस एसोसिएशन का अधिवेशन**

कानपुर, 5 अक्टूबर। देश के दक्षिण भारत यानि कर्नाटक व तमिलनाडु में चीनी मिलों में गन्ने से रिकवरी रेट कम होना एक चिंता का विषय बना हुआ है, जिसको लेकर आज चीनी उद्योग से जुड़े वैज्ञानिकों ने चर्चा की। सुझाव दिया कि अब गन्ने की प्रजाति को-86032 के स्थान पर को-128009, को-18009 और को-14027 को प्रयोग में लाना जरूरी हो गया है। यूपी में को-.0238 गन्ने की प्रजाति में लाल सड़न रोग से स्थिति खराब हो रही है। गन्ने की नई प्रजाति को लेकर विस्तार से मंथन हुआ। मंगलवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में करने पर चर्चा की, जिसमें 10 फीसदी स्टीम की बचत संभव है। गन्ने के रस की सफाई व प्रोसेसिंग के दौरान पीएच को ऑटोमेटिक कंट्रोल करने के लिए स्वतः नियंत्रण प्रणाली पर की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई। एनएसआई की वनिष्ठा शुक्ला ने एक कंडेनसेट पोलिशिंग यूनिट के बारे में प्रजेंटेशन दिया, जिसमें चीनी मिलों का गंदा पानी दोबारा प्रयोग के योग्य बनाया जा सकता है। वहीं संस्थान की रिसर्च फेलो अनुष्का अग्रवाल व श्रुति शुक्ला ने मीठी चरी से प्राकृतिक लो कैलोरी लिक्विड शुगर बनाने की विधि की जानकारी दी।

# शर्करा संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 79वां वार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन 52 शोधपत्र प्रस्तुत किये

देशमोर्चा/ कानपुर ब्यूरो

कानपुर मे दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया एवं राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 79वां वार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन 52 शोधपत्र प्रस्तुत किये गये इसमें से 26 गन्ना कृषि, 16 फैक्ट्री इंजीनियरिंग व प्रोसेसिंग तथा 10 सह-उत्पादों से संबंधित थी। विशेषज्ञों ने दक्षिण कर्नाटक एवं तमिलनाडू में चीनी की रिकवरी कम होने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए वर्तमान में प्रयोग में लायी जा रही गन्ना प्रजाति को 86032 के स्थान पर को 128009, को-18009 एवं को-14027 को प्रयोग में लाये जाने पर चर्चा की। साथ ही चुकन्दर की विभिन्न प्रजातियों पर किये गये अनुसंधान विवरण भी प्रस्तुत किया गया ताकि चुकन्दर से एथेनॉल बनाकर एथेनॉल ब्लेंडिंग का लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उ.प्र. गन्ना शोध परिषद द्वारा उत्तर प्रदेश में को-0238 गन्ने की प्रजाति में लाल सड़न रोग के कारण उत्पन्न स्थिति को देखते हुए नयी गन्ने की प्रजातियों के बारे में एक रोड मैप प्रस्तुत किया गया। प्रोसेसिंग सेक्शन में चीनी मिल की उत्पादकता बढ़ाने, ऊर्जा एवं पानी की खपत कम करने तथा चीनी की गुणवत्ता बढ़ाने सम्बंधित विभिन्न विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। समापन समारोह में संस्थान के निदेशक ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए यह आशा व्यक्त की कि भारत में चीनी उद्योग न केवल आत्मनिर्भर होगा बल्कि अपने प्रयासों से दूसरे देशों को चीनी एवं अन्य उत्पाद निर्यात करने में संभव हो सकेगा।

## लखीमपुर खीरी में हुई घटना के संबंध में पत्रकार संघर्ष मोर्चा ने जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

# गन्ने की तीन नई प्रजातियां बोएं किसान, होगा मुनाफा

### लाल सड़न रोग नहीं लगेगा, कम सिंचाई में पैदावार भी अधिक होगी

### एनएसआई में हुए अधिवेशन में गन्ना प्रजातियों का रोड मैप किया गया प्रस्तुत

कानपुर। दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया और नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) के बैनर तले आयोजित 79वें वार्षिक अधिवेशन का समापन मंगलवार को हो गया। एनएसआई सभागार में आयोजित समापन सत्र में उ.प्र. गन्ना शोध परिषद ने गन्ना प्रजातियों के संबंध में रोड मैप प्रस्तुत किया।

विशेषज्ञों ने बताया कि यूपी, हरियाणा, पंजाब और उत्तराखंड में बोई जाने वाली गन्ने की प्रजाति को-0238 बोने से मना कर दिया गया है। इस प्रजाति में लाल सड़न रोग होने लगा है। यह प्रजाति यूपी में 86 फीसदी क्षेत्रफल में बोई जा रही है जबकि कोई भी प्रजाति 50 फीसदी से अधिक क्षेत्रफल में नहीं बोई जानी चाहिए। इसके स्थान पर को-128009, को-18009 और को-14027 प्रजातियां तैयार की गई हैं। लाल सड़न रोग मुक्त इन प्रजातियों में सिंचाई की कम जरूरत पड़ेगी। पैदावार भी अधिक होगी तो मुनाफा बढ़ेगा।

एनएसआई में संजय अवस्थी, निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन, जाधव, प्रदीप त्यागी और आलोक सक्सेना ने गन्ना संबंधी विभिन्न जानकारियां दीं। संवाद

## कोरोना काल में बढ़ी लकालक सफेद चीनी की मांग

कोरोना काल के दौरान पूरी दुनिया में लकालक सफेद चीनी की मांग बढ़ गई। इस चीनी में सल्फर इस्तेमाल नहीं होता है। इससे यह सेहत के लिए बेहतर मानी जाती है। इस संबंध में डालमिया भारत शुगर एंड इंडस्ट्रीज दिल्ली के महाप्रबंधक परम सिंह ने अपना रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अत्यधिक सफेद चीनी को सल्फर के बजाय चूने के पानी से साफ किया जाता है। इसके बाद विशेष तकनीक अपनाई जाती है। यह चीनी रिफाइनरी में तैयार होती है। कोरोना काल में उन्होंने अपनी चीनी मिल को रिफाइनरी में बदल दिया है।

एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि जिन तीन प्रजातियों की संस्तुति की गई है, वे कोयंबटूर गन्ना संस्थान ने तैयार की हैं।

इस मौके पर चुकंदर की विभिन्न प्रजातियों पर भी शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। चुकंदर से इथेनॉल बनाकर पेट्रोल में मिश्रण का लक्ष्य पूरा करने के लिए कहा गया। गन्ना कृषि पर 26, फैक्ट्री इंजीनियरिंग और प्रोसेसिंग पर 16 और गन्ना के सह उत्पादों पर 10 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। एनएसआई की रिसर्च फेलो अनुष्का अग्रवाल और श्रुति शुक्ला ने मीठी चरी से लो कैलोरी शुगर बनाने, वनिष्ठा शुक्ला ने पोलिशिंग यूनिट संबंधी शोध पत्र प्रस्तुत किया। (ब्यूरो)

# चीनी का उत्पादन बढ़ा अब इथेनाल को बढ़ाने की बारी

## 79 वें वार्षिक अधिवेशन का राज्यपाल ने आनलाइन किया शुभारंभ

दि शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसिएशन आफ इंडिया के वार्षिक अधिवेशन में लोगों को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। साथ में चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय भूसरेड्डी, दि यूपी कोआपेटिव शुगर फैक्टरीज फेडरेशन के एमडी रमाकांत पांडेय, एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय अवस्थी व संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ● जागरण

जागरण संवाददाता, कानपुर : प्रदेश में गन्ने की अच्छी पैदावार के लिए अच्छे बीज और नई तकनीक वजह है। पिछले कई वर्षों में चीनी का उत्पादन बढ़ा है। अब पेट्रोल में ब्लेंडिंग के फीसद को बढ़ाने के लिए इथेनाल का उत्पादन अधिक करना होगा। यह बात राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कही। वह सोमवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) में दि शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसिएशन आफ इंडिया का 79 वां वार्षिक अधिवेशन का आनलाइन शुभारंभ कर संबोधित कर रहीं थी। उन्होंने कहा कि प्रदेश का 30 लाख किसान गन्ने की खेती कर रहा है। कृषि विज्ञानियों की वजह से तकनीक में तेजी आई है। अभी और कार्य करने की जरूरत है। कोरोना का काल में तकनीक की ताकत दुनिया देख चुकी है। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सचिव सुधांशु पांडेय भी आनलाइन जुड़े। उन्होंने कहा कि चीनी मिलों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मूल्य संवर्धित उत्पाद का निर्माण कर आय बढ़ानी होगी। इथेनाल की पेट्रोल में 20 फीसद ब्लेंडिंग के लक्ष्य को 2025 तक प्राप्त करने के प्रयास चल रहे हैं। अपर मुख्य सचिव संजय भूसरेड्डी ने गन्ने की प्रजातियों में सुधार के साथ ही जैव ईंधन के उत्पादन पर जोर दिया। अधिवेशन की थीम बायो फ्यूल और बायो एनर्जी थी। विभिन्न सत्रों में शोध पत्र, पेटेंट आदि प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम आनलाइन और आफलाइन मोड पर आयोजित हुआ, जिसमें करीब पांच हजार लोग शामिल हुए। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने ने इथेनाल का उत्पादन बढ़ाने की रूपरेखा प्रस्तुत की। संस्थान के स्थापना दिवस भी मनाया गया। वार्षिक रिपोर्ट, भविष्य की योजनाएं बताई गईं। संस्थान पर बनी डाक्युमेंट्री फिल्म प्रस्तुत हुई। एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय अवस्थी, अमित खट्टर, संजय देसाई समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

### चीनी और डिस्टिलरी उद्योग की तकनीक बताई

एक्सपो में दो दर्जन से अधिक कंपनियों के स्टाल लगाए गए थे। इसमें चीनी और डिस्टिलरी उद्योग से संबंधित तकनीक प्रदर्शित की गई। इसमें जीरो डिस्चार्ज, ग्रीन फ्यूल, ट्रीटमेंट प्लांट, रिफाइंड चीनी, भूरी चीनी आदि को शामिल किया गया।

### लाइफ टाइम अचीवमेंट का खिताब

● मानसिंह भाई कल्याणजी पटेल, आरएस राघवन, निधीश प्रकाश, जयकुमार ताता साहेब जाटव, जेपी श्रीवास्तव

### ट्रक में फ्लोर मिल की तकनीक, माडर्न किचन

निमी स्टील कंपनी का ट्रक भी आया था, जिसमें स्टेनलेस स्टील की फ्लोर मिल के उपकरण, माडर्न किचन, लिफ्ट, बिल्डिंग, रैक, चकर्ड शीट आदि प्रदर्शित था। यह हिसार से प्रदर्शनी में शामिल हुआ। तकनीशियन अभिषेक और राहुल कुमार ने जानकारी दी।

### इंडस्ट्री एक्सीजेंस का अवार्ड

● संजय भूसरेड्डी, संजय रस्तोगी, सचिन निकम, जिंदल स्टेनलेस स्टील, श्रीजी प्रासेस लिमिटेड, मुनीष मदान, मुथुवेलप्पन, प्रो. डी स्वेन, डा. एसएस निंबल्कर, एनडी थाकरे।

# बाजार के अनुसार बनायें चीनी : राज्यपाल

कानपुर (एसएनबी)। प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने द शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसो. ऑफ इंडिया के अधिवेशन के उद्घाटन संबोधन में चीनी मिलों में यंत्रीकरण व उत्पादन बढ़ोतरी के साथ ही बाजार की मांग के अनुरूप चीनी की गुणवत्ता बेहतर करने की बात कही। उन्होंने भारत के चीनी उद्योग के विकास में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर व शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसो. की भूमिका को सराहा। राज्यपाल ने ऑनलाइन माध्यम से अधिवेश का उद्घाटन किया।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान व शुगर टेक्नोलॉजिस्ट के सहयोग से संस्थान के स्थापना दिवस पर आयोजित एसो. के अधिवेशन में भारत सरकार के सचिव खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सुशांशु पांडेय, प्रदेश के अतिक्ति मुख्य सचिव संजय भूसरेड्डी (चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास), राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन, शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसो. अध्यक्ष संजय अवस्थी ने भागीदारी की व अधिवेशन को संबोधित किया। अधिवेशन में चीनी उद्योग की दशा-दिशा व भावी संभावनाओं पर चर्चा की गई। सचिव खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण श्री सुधांशु पांडेय ने कहा कि चीनी मिलों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पूरी 'शुगरकेन वैल्यू चेन' का उपयोग कर मूल्य वर्द्धित उत्पादों की आय का जरिया बनाना होगा। उन्होंने चीनी की मांग व आपूर्ति में संतुलन के दृष्टिगत चीनी मिलों को एथेनॉल बनाने के लिए प्रेरित किया, जिसकी मांग तेजी से बढ़ रही है। एसो. अध्यक्ष श्री अवस्थी ने कहा कि विश्व बाजार में चीनी की उपलब्धता कम होने को ध्यान में रख निर्यात पर जोर दिया। शर्करा संस्थान निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने एथेनॉल उत्पादन बढ़ाने की कार्य योजना प्रस्तुत करने के साथ ही कच्चे माल की उपलब्धता व भारत सरकार की 'गो इलेक्ट्रिक पॉलिसी' को ध्यान में रख भविष्य की रूप-रेखा बनाने की बात कही।

अधिवेशन के प्रथम दिन संजय भूसरेड्डी द्वारा प्रो. एसएन गुंडूराव मेमोरियल व्याख्यान दिया। चीनी उद्योग से जुड़े संजय देसाई व किरन डंगवाल ने एथेनॉल उत्पादन बढ़ाने की विभिन्न रणनीति पर प्रजेंटेशन दिया। शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसो. के इस 79वें वार्षिक अधिवेशन में ऑनलाइन व ऑफलाइन माध्यम से प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। यहां एसो. के विभिन्न प्रकाशनों का विमोचन हुआ। शर्करा संस्थान के स्थापना दिवस के दृष्टिगत वार्षिक रिपोर्ट के साथ ही एक डाक्यूमेंट्री 'ए ड्राइव थ्रू एनएसआई कैम्पस' जारी की गई। इस अवसर पर विशेषज्ञों व वैज्ञानिकों को विभिन्न अवार्डस से सम्मानित भी किया गया।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अधिवेशन में विशेषज्ञों - वैज्ञानिकों का हुआ सम्मान। फोटो : एसएनबी

द शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसो. ऑफ इंडिया का अधिवेशन

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने भी मनाया अपना स्थापना दिवस

चीनी उद्योग चीनी के अलावा अन्य मूल्यवर्द्धित नये उत्पाद लाकर बढ़ायें आय

# गन्ने का कचरा बढ़ाएगा किसानों की आमदनी

## अवशेषों से बन सकते हैं जेट फ्यूल, दवाएं, कागज समेत कई कीमती उत्पाद, स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइसेस लिमिटेड के एमडी ने दी जानकारी

रजा शास्त्री

कानपुर। चीनी बनाने में गन्ने का सिर्फ 30 फीसदी इस्तेमाल ही होता है। इसका 70 फीसदी भाग कचरा समझकर जला दिया जाता है, जबकि असली कमाई इसी कचरे से की जा सकती है। इस कचरे से जेट फ्यूल, दवाएं, कागज समेत दूसरे कीमती उत्पाद बन सकते हैं। इन उत्पादों को बनाकर किसान अपनी आमदनी दोगुनी कर सकते हैं। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में आयोजित अधिवेशन में आए स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइसेस लिमिटेड चंडीगढ़ के एमडी और शुगर इंजीनियर विवेक वर्मा ने यह बात बताई।

विवेक वर्मा।

उन्होंने बताया कि किसी फसल के शत-प्रतिशत इस्तेमाल का फार्मूला सिर्फ गन्ने तक ही सीमित नहीं है। इसे गेहूं, धान और दूसरे फसलों के अवशेषों के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इससे धान के खूंट जलाने से हर साल होने वाले प्रदूषण से भी बचा जा सकता है।

उन्होंने अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते वक्त तर्क दिया कि इसी कचरे से भूगर्भ में पेट्रोलियम बना है। उनका कहना है कि गन्ने का रस निकालकर चीनी बनाना तो एक काम हुआ। लेकिन गन्ने के पत्ते, जड़ें, मोलेसेस वगैरह सभी काम की हैं।

### ये चीजें बन सकती हैं कचरे से

कचरे से जेट फ्यूल, प्लास्टिक, दवाएं, कागज, फर्नीचर, कपड़े, बिस्कुट, बिजली, लैक्टिक एसिड, अमीनो एसिड, पशुओं का फीड, टेक्सटाइल, कार्बन फाइबर, रेयान आदि बन सकता है। जो अंश बचेगा उससे कार्बोनिक खाद बनेगी जो गन्ने की फसल में इस्तेमाल होगी।

### बॉयलर की नहीं पड़ेगी जरूरत, वाष्प से चल जाएगा काम

विवेक ने बताया कि अभी तक गन्ना का यह कचरा मिलों के बॉयलर में जलाया जाता है। इसमें ईंधन और बिजली का खर्च उठाना पड़ता है। उन्होंने मेकेनिकल वैपर कम्प्रेशन तकनीक खोजी है। इस तकनीक से बॉयलर में कचरा जलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, सिर्फ वाष्प से ही काम चल जाएगा। चीनी मिलें बगैर बॉयलर के चल सकेंगी। इस तकनीक को उप राष्ट्रपति ने बीते रविवार को सीएसआईआर डायमंड जुबली टेक्नोलॉजी अवार्ड दिया है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को अपनाकर शामली में चीनी का पहला प्लांट इसी महीने लग जाएगा। दुनिया की सारी कंपनियां यह तकनीक अपना रही हैं।

## गन्ने की तीन नई प्रजातियां बोएं किसान, होगा मुनाफा

### लाल सड़न रोग नहीं लगेगा, कम सिंचाई में पैदावार भी अधिक होगी

### एनएसआई में हुए अधिवेशन में गन्ना प्रजातियों का रोड मैप किया गया प्रस्तुत

कानपुर। दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया और नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) के बैनर तले आयोजित 79वें वार्षिक अधिवेशन का समापन मंगलवार को हो गया। एनएसआई सभागार में आयोजित समापन सत्र में उ.प्र. गन्ना शोध परिषद ने गन्ना प्रजातियों के संबंध में रोड मैप प्रस्तुत किया।

विशेषज्ञों ने बताया कि यूपी, हरियाणा, पंजाब और उत्तराखंड में बोई जाने वाली गन्ने की प्रजाति को-0238 बोने से मना कर दिया गया है। इस प्रजाति में लाल सड़न रोग होने लगा है। यह प्रजाति यूपी में 86 फीसदी क्षेत्रफल में बोई जा रही है जबकि कोई भी प्रजाति 50 फीसदी से अधिक क्षेत्रफल में नहीं बोई जानी चाहिए। इसके स्थान पर को-128009, को-18009 और को-14027 प्रजातियां तैयार की गई हैं। लाल सड़न रोग मुक्त इन प्रजातियों में सिंचाई की कम जरूरत पड़ेगी। पैदावार भी अधिक होगी तो मुनाफा बढ़ेगा।

एनएसआई में संजय अवस्थी, निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन, जाधव, प्रदीप त्यागी और आलोक सक्सेना ने गन्ना संबंधी विभिन्न जानकारियां दीं। संवाद

### कोरोना काल में बढ़ी लकालक सफेद चीनी की मांग

कोरोना काल के दौरान पूरी दुनिया में लकालक सफेद चीनी की मांग बढ़ गई। इस चीनी में सल्फर इस्तेमाल नहीं होता है। इससे यह सेहत के लिए बेहतर मानी जाती है। इस संबंध में डालमिया भारत शुगर एंड इंडस्ट्रीज दिल्ली के महाप्रबंधक परम सिंह ने अपना रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अत्यधिक सफेद चीनी को सल्फर के बजाय चूने के पानी से साफ किया जाता है। इसके बाद विशेष तकनीक अपनाई जाती है। यह चीनी रिफाइनरी में तैयार होती है। कोरोना काल में उन्होंने अपनी चीनी मिल को रिफाइनरी में बदल दिया है।

एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि जिन तीन प्रजातियों की संस्तुति की गई है, वे कोयंबटूर गन्ना संस्थान ने तैयार की हैं।

इस मौके पर चुकंदर की विभिन्न प्रजातियों पर भी शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। चुकंदर से इथेनॉल बनाकर पेट्रोल में मिश्रण का लक्ष्य पूरा करने के लिए कहा गया। गन्ना कृषि पर 26, फैक्ट्री इंजीनियरिंग और प्रोसेसिंग पर 16 और गन्ना के सह उत्पादों पर 10 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। एनएसआई की रिसर्च फेलो अनुष्का अग्रवाल और श्रुति शुक्ला ने मीठी चरी से लो कैलोरी शुगर बनाने, वनिष्ठा शुक्ला ने पोलिशिंग यूनिट संबंधी शोध पत्र प्रस्तुत किया। (ब्यूरो)

# गन्ने में लाल सड़न रोग को रोकेंगी नई प्रजातियां

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आयोजित द शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन के 79 वें वार्षिक अधिवेशन के मौके पर चीनी व संबद्ध उद्योगों की बेहतरी व कायाकल्प के लिए 52 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। इनमें से 26 गन्ना कृषि, 16 फैक्ट्री इंजीनियरिंग व प्रोसेसिंग तथा 10 सह-उत्पादों से संबंधित थीं। उप्र गन्ना शोध परिषद ने उत्तरप्रदेश में को-0238 गन्ने की प्रजाति में लाल सड़न रोग के कारण उत्पन्न स्थिति को देखते हुए नई गन्ने की प्रजातियों के बारे में एक रोडमैप प्रस्तुत किया। देश में एथेनॉल ब्लेंडिंग का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए चुकंदर का उपयोग किये जाने विषयक शोध भी प्रस्तुत किया गया।

दो दिवसीय अधिवेशन के समापन अवसर पर मंगलवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते आशा जताई कि भारत में चीनी उद्योग न केवल आत्मनिर्भर होगा, बल्कि अपने प्रयासों से दूसरे देशों को चीनी एवं अन्य उत्पाद निर्यात करना संभव हो सकेगा। इस मौके पर विशेषज्ञों ने दक्षिण कर्नाटक एवं तमिलनाडु में चीनी रिकवरी कम होने पर

शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन का दो दिवसीय अधिवेशन संपन्न। फोटो : एसएनबी

चिंता जताते हुए उसे बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की। प्रोसेसिंग सेक्शन में चीनी मिलों की उत्पादकता बढ़ाने, ऊर्जा एवं पानी की खपत

> शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन के अधिवेशन में चीनी व संबद्ध उद्योगों के कायाकल्प को प्रस्तुत किये गये 52 शोध पत्र

कम करने तथा चीनी गुणवत्ता बढ़ाने संबंधित विभिन्न विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइस लिमिटेड ने मैकेनिकल वेपर री-कम्प्रेशन एवं प्लेट टाइप इवापोरेटर के प्रयोग द्वारा गन्ने के रस को गाढ़ा करने की तकनीक प्रस्तुत की, इससे लगभग 10 प्रतिशत स्टीम की बचत संभव होगी। कम ऊर्जा खपत में गन्ने से अधिक जूस प्राप्त करने की तकनीक प्रस्तुत की गई। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा गन्ने की रस की सफाई एवं प्रोसेसिंग के दौरान रस के पीएचओ को आटोमेटिक कंट्रोल करने हेतु एक स्वतः नियंत्रण प्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। संस्थान की वनिष्ठा शुक्ला ने एक कन्डेनसेट पोलिशिंग यूनिट के बारे में बताया, जो चीनी मिलों के गंदे पानी को पुनः प्रयोग योग्य बनाता है। संस्थान की ही रिसर्च फेलो अनुष्का अग्रवाल एवं श्रुति शुक्ला ने मीठी चरी से लो कैलोरी लिक्विड शुगर बनाने की विधि की चर्चा की।

# Guv for greater farm mechanisation to enhance sugar productivity

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

Uttar Pradesh Governor Anandiben Patel, on Monday, lauded the role of National Sugar Institute, Kanpur and the Sugar Technologists Association of India in the growth and development of the sugar industry in India.

Addressing virtually the 79th Annual Convention and International Sugar Expo jointly organised by the Sugar Technologists Association of India and National Sugar Institute, the Governor congratulated the NSI, Kanpur on its Foundation Day and stressed on working for greater farm mechanisation, productivity enhancement and improvement in the quality of sugar to meet market requirements.

Secretary, Food & Public Distribution, Sudhanshu Pandey, called upon the sugar industry to work together with the NSI for finding solutions to its various problems. He also discussed the balancing of the sugar demand-supply scenario and stressed upon the production of ethanol in the sugar factories by sacrificing sugar through various modes so that not only sugar demand-supply was balanced but also the target of 20 per cent blending of ethanol with petrol was achieved by 2025. He said in order to make the sugar mills 'atmanirbhar', efforts had to be made to utilise the whole sugarcane value chain to produce the value added products for enhancement in income.

Addressing the gathering, president of The Sugar Technologists Association of India, Sanjay Awasthi, said that the availability of sugar in the world market by 2022 would be reduced due to a shortfall in 70-80 lakh ton of sugar production in Brazil. He called upon the sugar industry to take advantage of this shortfall and export sugar to the sugar deficient countries.

NSI Director Prof Narendra Mohan presented a glimpse of the institute's activities, its role in providing the required technical manpower to the sugar industry and also the growth through technical assistance. He provided a detailed outline of enhancing the availability of ethanol through various modes of the ethanol blending programme. He further cautioned the industry to be careful in capacity building keeping in view the possible changes in the availability of raw material and the 'Go Electric' policy of the Government of India, according to which the conventional vehicles were planned to be replaced by the electric vehicles by 2030.

Delivering the Professor SN Gundu Rao Memorial Lecture, Additional Chief Secretary Sanjay Bhoosreddy discussed and stressed upon the transformation of sugar industry into a profitable industry by varietal improvement in sugarcane and production of biofuels.

Later more presentations for the conclave were made by Sanjay Desai, managing director, Regreen Excel EPC Industry Pvt. Ltd. and Kiran Dangwal, technical head, ISGEC, on various strategies required for enhancing ethanol production.

Earlier, during the inaugural session, various publications, like Proceedings of Convention, Directory of Sugar Factories & Distilleries Situated in India & Neighbouring Countries and souvenir were released and a documentary, 'A Drive Through NSI Campus' was screened.

Eminent experts and scientists and technologists were conferred with different awards. A total of 6,000 delegates took part in the conclave off-line and online.

रजा शास्त्री

कानपुर। चीनी बनाने में गन्ने का सिर्फ 30 फीसदी इस्तेमाल ही होता है। इसका 70 फीसदी भाग कचरा समझकर जला दिया जाता है, जबकि असली कमाई इसी कचरे से की जा सकती है। इस कचरे से जेट फ्यूल, दवाएं, कागज समेत दूसरे कीमती उत्पाद बन सकते हैं। इन उत्पादों को बनाकर किसान अपनी आमदनी दोगुनी कर सकते हैं। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में आयोजित अधिवेशन में आए स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइसेस लिमिटेड चंडीगढ़ के एमडी और शुगर इंजीनियर विवेक वर्मा ने यह बात बताई।

विवेक वर्मा।

उन्होंने बताया कि किसी फसल के शत-प्रतिशत इस्तेमाल का फार्मूला सिर्फ गन्ने तक ही सीमित नहीं है। इसे गेहूं, धान और दूसरे फसलों के अवशेषों के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इससे धान के खूंट जलाने से हर साल होने वाले प्रदूषण से भी बचा जा सकता है।

उन्होंने अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते वक्त तर्क दिया कि इसी कचरे से भूगर्भ में पेट्रोलियम बना है। उनका कहना है कि गन्ने का रस निकालकर चीनी बनाना तो एक काम हुआ। लेकिन गन्ने के पत्ते, जड़ें, मोलेसेस वगैरह सभी काम की हैं।

## ये चीजें बन सकती हैं कचरे से

कचरे से जेट फ्यूल, प्लास्टिक, दवाएं, कागज, फर्नीचर, कपड़े, बिस्कुट, बिजली, लैक्टिक एसिड, अमीनो एसिड, पशुओं का फीड, टेक्सटाइल, कार्बन फाइबर, रेयान आदि बन सकता है। जो अंश बचेगा उससे कार्बोनिक खाद बनेगी जो गन्ने की फसल में इस्तेमाल होगी।

## बॉयलर की नहीं पड़ेगी जरूरत, वाष्प से चल जाएगा काम

विवेक ने बताया कि अभी तक गन्ना का यह कचरा मिलों के बॉयलर में जलाया जाता है। इसमें ईंधन और बिजली का खर्च उठाना पड़ता है। उन्होंने मेकेनिकल वैपर कम्प्रेशन तकनीक खोजी है। इस तकनीक से बॉयलर में कचरा जलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, सिर्फ वाष्प से ही काम चल जाएगा। चीनी मिलें बगैर बॉयलर के चल सकेंगी। इस तकनीक को उप राष्ट्रपति ने बीते रविवार को सीएसआईआर डायमंड जुबली टेक्नोलॉजी अवार्ड दिया है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को अपनाकर शामली में चीनी का पहला प्लांट इसी महीने लग जाएगा। दुनिया की सारी कंपनियां यह तकनीक अपना रही हैं।

राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
@DoordarshanUttarPradesh


Welcome Delegates
79th
राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
@DoordarshanUttarPradesh


राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
@DDUttarPradesh

प्रो नरेंद्र मो
राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
@DoordarshanUttarPradesh

7:00 AM
...26.3KB/s
राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
@DoordarshanUttarPradesh

राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
@DoordarshanUttarPradesh

7:00 AM
राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
@DoordarshanUttarPradesh

राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
@DoordarshanUttarPradesh

7:00 AM
WASH ROOM
राज्यपाल ने कानपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान स्थापना दिवस समारोह का किया शुभारम्भ
KOO @DoordarshanUttarPradesh